मानवता के नाम पर

परमात्मा ने सृष्टि को जन्म दिया। अनेक प्रकार के जीव पृथ्वी पर अवतरित हुए जिनमें से मनुष्य का भी एक रूप सामने आया। मनुष्य की सोच, रहन-सहन, कार्य करने का ढंग अन्य जीवों से बिल्कुल भिन्न निकला। यानि मनुष्य की अपनी एक पहचान परमात्मा ने बनाई। मनुष्य परमात्मा की श्रेष्ठतम रचना है और शायद उसने इस प्रकार के जीव को इस कायनात को सजाने और संवारने के लिए ही बनाया हो। परन्तु आज देखने में कुछ और ही आता है। परमात्मा ने शायद ही सोचा हो कि यह विलक्षण प्रतिभा का जीव ऐसा कर दिखायेगा। मनुष्य ने अपनी बुद्धि का प्रयोग किया और इस सृष्टि की महत्वाकांक्षाओं और उसकी स्वार्थिक प्रवृत्तियों ने जीव को जीव से अलग कर, उसमें भेद पैदा कर दिया। जीव को जीवन का मित्र कम अपितु शत्रु अधिक बना दिया, कुछ ने अपने आपको बुद्धिजीवी घोषित कर, एक चालाकी का प्रदर्शन कर दिखाया। उसने बांटना प्रारम्भ कर, पूरी सृष्टि को बांट दिया। अलग-अलग राष्ट्र बन गये, सीमायें निर्धारित हो गयीं। थल, जल, पर्वत आदि सभी को अपनी सुख सुविधाओं के अनुकूल मनुष्य ने बांट लिया। परन्तु मानव के लिए यह दुर्भाग्य की बात है कि यह विभाजन का चक्र इतना होने पर भी नहीं रूक सका। इंसान, इंसान न रहा अपितु वह हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई आदि आदि में बंट गया। आज इन्सान की पहचान इंसान के रूप में नहीं बल्कि एक वर्ग विशेष का सदस्य होने के रूप में होती है। संसार में अनेक विद्वानों ने चिल्ला, चिल्लाकर कहा कि हम सब एक स्रोत की उपज हैं। हमारा मूल रूप एक ही है। यह विभाजन मनुष्य की स्वार्थिक प्रवृत्तियों का परिणाम है। परन्तु जितना अधिक मानवता, नैतिकता आदि का प्रचार हुआ उतनी ही वर्गवाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद की जड़ें मजबूत होती गयीं। ऐसा क्यों होता रहा, यह एक गम्भीर विषय है और इसका सरल सा उत्तर है कि जब मनुष्य का नैतिक पतन होता है तो वह अपने मार्ग से भटक जाता है। उसकी दशा ऐसी होती है जैसी आज हमारे मानव समाज की हो रही है। परमात्मा की सुन्दर सृष्टि को विष के समान बनाने में मनुष्य की स्वार्थिक प्रवृत्तियों का विशेष योगदान रहा। मानवता का प्रचार करने वाले का स्वयं का नैतिक स्तर गिर गया और इसका एक भयंकर परिणाम समाज में उभर कर आया। इसके अनेकों उदाहरण हमारे समाज में मिल जायेंगे।

मैंने सुना है कि एक बार एक महात्मा प्रात: एक धार्मिक सभा को सम्बोधित करने जा रहे थे। प्रात: का समय था। महात्मा जी सोचते हुए जा रहे थे कि मुझे दुनिया में ज्ञान का प्रचार करना है, लोगों को जाग्रत करना है। आज समाज पतन की ओर जा रहा है, मानवता का ह्रास हो रहा है। यह विचार का चिन्तन करते हुए चले जा रहे थे क्योंकि मानवता के नाम पर ही उन्हें मन्दिर में प्रवचन करना था। सहसा एक करूणा भरी आवाज आई, कोई सज्जन मेरी रक्षा करो! एक बूढ़ा व्यक्ति था वह भी प्रात: मन्दिर जाते समय जल्दी जल्दी में एक गहरी नाली में गिर गया था, सुबह का समय था। बार-बार चिल्लाता था। महात्मा की नजर पड़ी कि कोई व्यक्ति नाली में गिरा है। सोचते-सोचते चलते रहे कि यदि मैं इसे निकालता हूं तो मेरे कपड़े गन्दे हो जायेंगे और मुझे देर हो जायेगी, जल्दी धर्म सभा में पहुंचना है, लोग क्या कहेंगे, कैसे महात्मा हैं मानवता का प्रचार करने निकले है, और समय का पालन नहीं करते हैं। महात्मा के मन में द्वन्दता थी कि मुझे क्या करना चाहिए, मगर गति विद्यमान थी। दुनिया में कोई हंसता है कोई रोता है, अपना-अपना भाग्य है। महात्मा का ध्यान धर्म सभा में केन्द्रित था, सोच जारी थी और इसी सोच को लिए मन्दिर पहुंच गये। मन्दिर में भारी भीड़ थी, महात्मा के प्रवचन सुनने वालों की। महात्मा जी का तालियां बजाकर स्वागत किया गया। प्रवचन प्रारम्भ किया। वृद्ध भी जो एक सज्जन द्वारा नाली से निकाल दिया गया था, धर्म सभा में उपस्थित हुआ और चिल्लाकर बोला-बन्द करो यह आडम्बर, झूठा भाषण; केवल कहने से ही कुछ नहीं होता। मैंने देख ली है तुम्हारी मानवता! वृद्ध इतना ही कह पाया था कि कुछ व्यक्तियों ने उसे पागल समझ, मन्दिर से बाहर निकाल दिया। महात्मा जी ने प्रवचन की गति और तेज की जिससे कि अपने श्रोताओं का ध्यान आकर्षित कर सकें। वृद्ध बेचारा अपने

तेजपाल सिंह, परिचर

मन की व्यथा न सुना सका। उस श्रृद्धालु को पागल समझ लिया गया था, उसकी आत्मा कुंठित हो गयी थी। वह बेचारा दबी भावनाओं को लेकर अपने घर लौट गया था। यह दशा हमारे प्रबुद्ध समाज की है।

संसार में सदपुरूषों की कमी नहीं है। आज भी आपको सदपुरूष बहुत मिल जायेंगे परन्तु यह केवल एक आदर्श है। जब तक मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप को नहीं पहचानेगा, वह मानवता को नहीं समझ सकता और मानवता, नैतिक मूल्यों के अभाव में एक कल्पना ही कही जायेगी। किसी भी समाज के उत्थान में तीन शक्तियों का विशेष योगदान होता है। माता, शिक्षक, सन्यासी, ये तीनों किसी भी समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जिस समाज में ये तीनों अपना उत्तरदायित्व न निभायें, उसकी दशा बिना चालक की नाव जैसी होती है। एक बार की बात है एक गांव में एक तमाशा हो रहा था। नर, नारी व बच्चों आदि की बड़ी भीड़ लगी थी। एक मां भी अपने एक छोटे बेटे को तमाशा दिखाने के लिये आयी थी। भीड़ के कारण बच्चा भी देखने के लिए बहुत आग्रह कर रहा था। उसने बच्चे की कोई परवाह न कर एक युक्ति सोची। वह बच्चे को नीचे बैठाकर उसकी पीठ पर चढ़ कर तमाशा देखने लगी। इससे उसकी कुछ ऊंचाई बढ़ गयी थी। बच्चा मां-मां कहकर चिल्ला रहा था। वह अपने स्वार्थ के लिए सब कुछ न्यौछावर करने को तैयार थी। बच्चा बेचारा चिल्लाता रहा, बड़ा करूणाजनक था वह दृश्य। क्या हो गया आज मानव समाज को? कितना नैतिक पतन हो गया है समाज का। मनुष्य रात दिन अपनी स्वार्थ पूर्ति में लगा रहता है। मानवता आज बिक चुकी है, चारों तरफ भ्रष्टाचार का तांडव नृत्य कर रहा है। आये दिन कहीं दहेज के कारण हत्या, लूट के कारण हत्या, प्रतिशोध के कारण हत्या, हम समाचार पत्रों में भी रोज पढ़ते हैं। परन्तु क्या कभी यह अमानुषिकता का चक्र रूक सकेगा, कोई नहीं जानता। मनुष्य विकास की ओर बढ़ रहा है। सभी क्षेत्रों में विकास कर रहा है। तो वह अमानवीय कार्यों में क्यों नहीं विकास करेगा।

आज तो प्रतियोगिता का युग है। सभी चीजों की प्रतियोगिता तो हो रही है जैसे सौन्दर्य प्रतियोगिता, ज्ञान प्रतियोगिता, सत्य प्रतियोगिता, झूठ प्रतियोगिता । आज प्रतियोगिता के युग में प्रत्येक क्षेत्र में वृद्धि करने का लोग प्रयास करते हैं-ज्ञान, सत्य, झूठ आदि सभी में। झूठ में तो आज बिल्कुल कमाल हो गया। झूठ प्रतियोगिता में बहुत से लोग पुरस्कार पा चुके। एक घटना याद आती है। एक बार एक राजा ने एक झूठ प्रतियोगिता का आयोजन किया। विषय था जो सबसे बड़ा झूठ बोलेगा उसे पुरस्कार दिया जायेगा। और मजे की बात है कि लोगों ने एक से एक झूठ बोला परन्तु इनाम एक ऐसा व्यक्ति प्राप्त कर ले गया जिसका आप अन्दाजा भी नहीं लगा सकते। हुआ यूं कि राजा ने एक व्यक्ति से पूछा कि आप क्या झूठ सिद्ध करोगे? वह व्यक्ति झूठ सिद्ध करने में सफल रहा। उसने बताया कि एक बार मैं कहीं जा रहा था। एक जगह चार औरतें शान्त मुद्रा में बैठी थीं। राजा ने कहा यह वास्तव में सबसे बड़ा झूठ है। इसे इनाम दे दिया जाये। यह असंभव बात है कि चार औरतें एक साथ बैठी हों, और शान्त हों। ऐसा औरतों के विषय में कहा जाता है। वह झूठ सबसे बड़ा माना गया और उसे इनाम दे दिया गया। अत: इस संसार में किसी चीज की कमी नहीं है यहां झूठ को भी इनाम मिल जाता है। बड़ा अजीब है यह संसार। मेरे कहने का अभिप्राय यह नहीं है कि आज मानवता बिल्कुल ही समाप्त हो गयी है। ऐसा बिल्कुल नहीं है। अभी भी ऐसे मानवतावादी, नैतिक मनुष्य आपको मिल जायेंगे जिसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते। मेरे एक मित्र हैं योग साधना में भी रूचि रखते हैं। जब कभी हम कहीं भ्रमण करने जाते हैं तो वे वड़क पर जो भी पत्थर, ईंट आदि पड़े होते हैं उन्हें सड़क से एक तरफ फेंकते हुए चलते जाते हैं। उनका कहना है कि यदि इन्हें यहीं छोड़ दिया जाये तो किसी को भी ठोकर लग सकती है और कोई भी दुर्घटना हो सकती है। अत: उनके इस तरह के कार्य से मुझे बड़ा आश्चर्य हुआकि आज लोग दूसरों के रास्ते में ईंट पत्थर फेंकते हैं और आप साफ करते हैं। हम चाहे इस पर कुछ भी ध्यान न दें लेकिन बड़ी महानता की बात है। अगर सब लोग इस प्रकार चरित्र निर्माण करें तो यहां स्वर्ग अर्थात सुख का साम्राज्य हो सकता है। मानव में यदि मानवता नहीं है तो उसका जीवन निरर्थक है। वह जीवन के मूल को नहीं समझ सकता। वह एक अच्छे समाज का निर्माण कर सके, यह ऐसे मानव से आशा नहीं की जा सकती। मानवता जीवन की खुशबू है और नैतिकता उसका रस है।